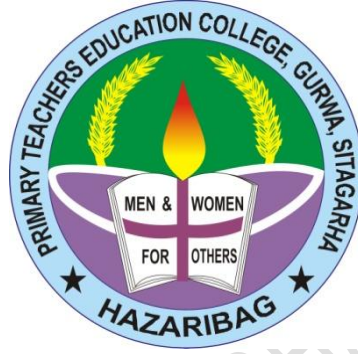


प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण
का
द्विवर्षीय पाठ्यक्रम आधारित नोट्स



Year : 1st

Paper : V

Subject : HINDI

Compiled & Edited by : Mrs. Sushila Ekka

PRIMARY TEACHERS EDUCATION COLLEGE

Gurwa, P. O.- Sitagarha, Dist. – Hazaribag -825 303, Jharkhand, INDIA

(A Jesuit Christian Minority Institution)

Recognized by ERC, NCTE vide order No. BR-E/E- 2/96/2799(12) dt 11.02.1997

Phone No. 06546-222455, Email: ptecgurwa1997@rediffmail.com Website: www.ptecgurwa.org

अनुक्रमणिका

प्रथम वर्ष

(HINDI)

इकाई 3 – पाठ-योजना

- गद्य शिक्षण परिचय
- गद्य शिक्षण की विधि
- पद्य शिक्षण परिचय, पद्य शिक्षण की विधि

PTEC GURWA SITAGARHA, HAZARIBAG

गद्य शिक्षण

हिंदी साहित्य के दो भाग होते हैं।

- i) 'गद्य' साहित्य।
- ii) 'पद्य' साहित्य।

“गद्यं कविनां निकषं वदन्ति।”

अर्थात् गद्य कवियों एवं लेखकों कसौटी होती है।

- विचार प्रौढ़ी शास्त्रीयता सम्पन्न एवं व्याकरण से मर्यादित : अर्थात् गद्य में अलग-अलग विचारधाराएँ होती हैं जो कि शास्त्रों से परिपूर्ण होती हैं एवं गद्य में व्याकरण का सही प्रयोग होता है।
- गद्य ललित वृत्तियों की अनुभूतियों से प्रकाशित होती है।
- गद्य विचारों, भावों, तर्क, चिंतन, दर्शन की चिंतन की अभिव्यंजना का सार्थक माध्यम है।
- गद्य आधुनिक युग में जन-जन का विचार विनिमय का प्रचलित साधन है।

गद्य शिक्षण के क्या उद्देश्य अथवा आधुनिक युग में गद्य शिक्षण पर प्रकाश डालें ?

अथवा

गद्य शिक्षण में उपस्थित शब्दों की व्याख्या करने की उचित उदाहरण भी दीजिए।

अथवा

गद्य शिक्षण के प्रमुख सोपान कौन-कौन से हैं, विवेचन कीजिए।

उत्तर :-हिन्दी साहित्य की दो विधाएँ हैं। पद्य और गद्य। गद्य हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण विद्या है। इसे 'गद्य' कविनां निकषं वदन्ति" कहा गया है। अर्थात् गद्य कवियों और लेखकों की कसौटी है। गद्य एक ओर जहाँ विचार प्रौढ़ी से परिपुष्ट शास्त्रीयता से सम्पन्न, व्याकरण से मर्यादित रहता है। वहाँ दूसरी ओर मन की ललित वृत्तियों की अनुभूति से प्रकाशित रहता है।

दूसरे शब्दों में गद्य विचारों, भावों, तर्क, चिंतन एवं दर्शन के चिंतन की अभिव्यंजना का सार्थक माध्यम है। विविध विचारों की मनोरम अभिव्यक्ति गद्य के द्वारा ही सम्पन्न होती है।

आधुनिक युग में गद्य जन-जन के विचार विनिमय का प्रचलित साधन है।

गद्य शिक्षण का महत्व :

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग को गद्य का युग कहा गया है, क्योंकि इस रूप में गद्य साहित्य प्रयाप्त मात्रा में रचना हुई है एवं उसके विभिन्न रूपों का विकास हुआ है। वह आधुनिक युग विज्ञान के तीव्र विकास का रूप है। परिणाम स्वरूप सारा ज्ञानात्मक साहित्य दर्शन, राजनीतिक शास्त्र, अथ शास्त्र, मनोविज्ञान, प्रमाण एवं नीति शास्त्र का विज्ञान कलाकौशल वाणिज्य आदि गद्य में ही है।

गद्य साहित्य का क्षेत्र विशाल एवं व्यापक है। हमारे समस्त सामाजिक शैक्षिक, सांस्कृतिक, वाणिज्यिक, व्यवसायिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय क्रियाकलाप गद्य के माध्यम से ही सम्पन्न होते हैं। तत् संबंधी साहित्य गद्य में ही उपलब्ध है, इसलिए भी छात्रों के लिए गद्य शिक्षण आवश्यक है।

भावात्मक साहित्य के दृष्टि से भी गद्य का क्षेत्र अति व्यापक एवं नानारूपात्मक है। गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं में एवं शैलियों पर दृष्टि डालने से गद्य की अभिव्यंजनात्मक विविधता एवं शक्ति का परिचय अपने आप मिल जाता है। ये विधाएँ हैं निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्टाज, आलोचना इत्यादि। इन साहित्यिक विधाओं एवं शैलियों का परिचय गद्य शिक्षण

में विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके माध्यम से जीवन और जगत के सभी पक्षों का ज्ञान बालकों को प्राप्त होता है।

विषय सामग्री की जितनी विविधता गद्य सामग्री में संभव है, उतनी कविता में संभव नहीं है। ज्ञानोपलब्धि का साधन तो गद्य साहित्य ही है। पद्य की तरह गद्य के माध्यम से भावात्मक एवं कामात्मक अभिव्यक्ति इतनी सरल, सशक्त, पुष्ट और प्रभावपूर्ण होने लगी है कि गद्य भी कविता के समान ही हृदय को स्पर्श करता है। 'प्रेमचंद्र' प्रसाद, महादेवी वर्मा, चतुर्सेन, शास्त्री, राय कृष्ण दास, बेनीपुरी आदि के गद्य इसके प्रमाण हैं। कविता में कहीं-कहीं पर व्याकरण का उल्लंघन पाया जाता है। पर गद्यकर को भाषा की शुद्धता, स्वच्छता और उसके व्याकरण संवत् के रूप का सदा ध्यान रखना पड़ता है। अतः भाषा के शुद्ध, परिनिष्ठित रूप का ज्ञान गद्य साहित्य के अध्ययन से ही संभव है, कविता में हमारा ध्यान उसके सौंदर्य तथा भावनात्मक पक्ष की ओर ही अधिक रहता है। अतः शिक्षण में भाषा तत्त्वों पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता पर गद्य शिक्षण में भाषिक तत्त्वों का ज्ञान प्रदान करने के लिए विशेष अवसर मिलता है। भाषिक तत्त्वों जैसे :- शब्द भंडार, शब्दों के शुद्ध उच्चारण, शब्दों के अर्थ उनका प्रयोग एवं रचना, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि हैं। ज्ञान एवं भाषिक कौशलों के अभ्यास की दृष्टि से गद्य शिक्षण की उपयोगिता सर्वमान्य है।

गद्य का अनुपम स्थान है। अतः व्यवहारिक जीवन में उपयोगिता तथा अधिगम की दृष्टि से गद्य शिक्षण का महत्व पद्य शिक्षण से अधिक है। भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों की विचारधारा शक्ति में आविर्बुद्धि करना अपनी बात को प्रभावोत्पादक ढंग से सुबोध भाषा में सरल शैली में प्रस्तुत कर सके इसकी दक्षता उत्पन्न करना गद्य शिक्षण का महत्वपूर्ण कार्य है।

गद्य शिक्षण के उद्देश्य :-

गद्य शिक्षण के मुख्य रूप से दो उद्देश्य हैं :-

- i) सामान्य उद्देश्य
- ii) विशिष्ट उद्देश्य

1. सामान्य उद्देश्य :-

- i) छात्रों में भाषा संबंधी ज्ञान की आविर्बुद्धि करना।
- ii) छात्रों में शब्द भंडार की वृद्धि करना।
- iii) छात्रों में ऐसी क्षमता को विकास करना जिससे की वह मुहावरों का यथास्थान पर प्रयोग कर सकें।
- iv) छात्रों में शुद्ध-शुद्ध शब्दोच्चारण का विकास करना।
- v) छात्रों में ऐसी क्षमता का विकास करना जिससे कि वह स्वयं पढ़कर समझ सकें तथा दूसरों को भी समझा सकें।
- vi) छात्रों में तार्किक एवं मनन शक्ति का विकास करना।
- vii) छात्रों में कल्पना शक्ति का विकास करना।
- viii) छात्रों में कलापूर्ण वाचन का विकास करना।
- ix) छात्रों में रचनात्मक शक्ति का विकास करना।
- x) गद्य के विभिन्न शैलियों का ज्ञान देना।
- xi) छात्रों में अर्थ स्पष्ट रूप से समझने की क्षमता का विकास करना।

2. विशिष्ट उद्देश्य / मुख्य उद्देश्य :-

गद्य शिक्षण में मुख्य उद्देश्य पाठ के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। जैसे यदि पाठ विज्ञान से संबंधित है तब ऐसी दशा में गद्य शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में विकास के प्रति रुचि उत्पन्न करना होगा।

जो पाठ वर्णन या यात्रा से संबंधित होगा उसका मुख्य उद्देश्य छात्रों में प्राकृतिक प्रेम उत्पन्न करना तथा वर्णन और भाषा शैली का ज्ञान कराना होगा। मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्वान सुझाव देते हैं। किसी पाठ का मुख्य उद्देश्य जानने के लिए शिक्षक को संपूर्ण पाठ को ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिए और जानना चाहिए कि यथा पाठ की शैक्षिक मान्य क्या है? इसके साथ ही पाठ की विषय सामग्री बच्चों के किन संवेगों को जागृत कर सकती है। वह मानव जीवन के किस पहलू पर विकास डालती है और उससे बच्चों के चरित्र के किस अंग को प्रभावित किया जा सकता है। उस पाठ के भाषाई तत्व क्या हैं? तथा उसकी भाषा शैली क्या है, जिनको जानना छात्रों के लिए आवश्यक है। तभी शिक्षक पाठ के उद्देश्यों की सही जानकारी छात्र को कराने में सक्षम हो सकेंगे।

गद्य पाठ शिक्षण प्रणाली अथवा विधि तथा पाठ विकास के सोपान :-

गद्य पाठ की शिक्षण प्रक्रिया में निम्न अंकित सोपान आवश्यक है। इन्ही शिक्षण सोपानों अथवा प्रणाली के आधार पर प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री 'हर्बर्ट' ने अपने पाँच शिक्षण सोपानों का निर्माण किया जो इस प्रकार है।

(1) पूर्व-ज्ञान :

नवीन ज्ञान को यदि बालकों के पूर्व ज्ञान से संबंध कर दिया जाए तो बालक नई बातों को शीघ्र ही ग्रहण कर लेते हैं। बालक किसी माध्यम से जो कुछ भी सीख चुके हैं, वही उनके पूर्व ज्ञान में सम्मिलित किया जा सकता है। इस ज्ञान का संग्रह जितना अधिक होगा। बालक की जानकारी उतनी अधिक होगी। पूर्व ज्ञान के आधार पर ही मूल पाठ प्रस्तुतीकरण किया जा सकता है। शिक्षक का कर्तव्य है कि वह मूल पाठ प्रस्तुत करने से पहले शिक्षक को पूर्व ज्ञान का पता लगा लेना चाहिए। पूर्व ज्ञान के आधार पर ही प्रस्तावना की सफलता निर्भर करती है।

(2) प्रस्तावना :

प्रस्तावना से शिक्षक नए पाठ से छात्रों को परिचित करता है, पाठ की सफलता के लिए आवश्यक है कि उसकी तैयारी शिक्षक अच्छी तरह से करें। इसके लिए शिक्षक के नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान के आधार पर पदान करना चाहिए। जितनी सफलता से वह छात्रों के पूर्व ज्ञान को जागृत करेगा उतना ही छात्र नवीन ज्ञान को ग्रहण करने के लिए तट पर होंगे। गद्य के पाठ से प्रस्तावना का आरंभ निम्न विधियों में से किसी एक के द्वारा किया जा सकता है।

i. लेखक के संबंध में कुछ कथन करके (जीवनी):

इस विधि द्वारा शिक्षक लेखक के जीवन से संबंधित किसी महत्वपूर्ण घटना का वर्णन करता है। और पाठ का परिचय दे सकता है। इस विधि का प्रयोग केवल उच्च कक्षाओं में ही किया जा सकता है।

ii. समस्या तथा कौतूहल उत्पन्न करके :

प्रस्तावना में पाठ से संबंधित किसी समस्या को छात्रों के समाने प्रस्तुत किया जा सकता है। या पाठ के पति छात्रों में कौतूहल उत्पन्न किया जा सकता है।

iii. सहायक शिक्षण सामग्री द्वारा :

प्राथमिक कक्षाओं में सहायक सामग्री के द्वारा प्रस्तावना का आरंभ किया जा सकता है। यदि छात्रों को गाँधीजी का पाठ पढ़ाना है, तो उन्हें गाँधीजी का चित्र दिखाकर प्रश्न दिए जा सकते हैं।

iv. प्रश्नोत्तर द्वारा :

पूर्वज्ञान से संबंधित तथा पाठ से संबंधित कुछ प्रश्न किए जा सकते हैं। प्रस्तावना का प्रश्न करते समय निम्नांकित बातों पर आवश्यक ध्यान देना चाहिए।

- क) प्रस्तावना में व्यर्थ के प्रश्न न किए जाए।
- ख) प्रस्तावना अधिक लंबी न हो।
- ग) प्रस्तावना यथा संभव पूर्वज्ञान के आधार पर हो।
- घ) प्रश्न मनोवैज्ञानिक क्रम से व्यवस्थित किए जाए।
- ङ) हाँ या नहीं उत्तर मिलने वाला प्रश्न न पूछे जाएँ

(3) उद्देश्य कथन :

प्रस्तुतिकरण :

प्रस्तुतिकरण हर्बट की पंच वही का यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण भाग है। अतः पूर्व ज्ञान के आधार पर गद्य शिक्षण के जिस पाठ की प्रस्तुति की जा रही है, उसमें शिक्षक को एक निश्चय कर लेना चाहिए कि मूल पाठ को इस ढंग से रखा जाए कि उसमें एक क्रम हो और सीखने का प्रतिकूल सामने आए। भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को सामने रखकर शिक्षण प्रक्रिया का कार्य प्रस्तुतिकरण से आरंभ किया जाए। प्रस्तुतिकरण में गद्य पाठ वस्तु के रूप में बालक सीखने वाले के रूप में और शिक्षक की भूमिका सीखने-सीखाने के आधार को जागृत कर शिक्षण का इस पहुँचाने की होती है। अतः गद्य पाठ के प्रस्तुतिकरण में सर्वप्रथम शिक्षक एव छात्रों द्वारा वाचन होता है। कक्षा शिक्षण में वाचन दो तरह से होता है :-

i) आदर्श वाचन

ii) अनुकरण वाचन

i) आदर्श वाचन :

किसी लिखित अंश को शिक्षक पढ़कर छात्रों को सुनाते हैं उसे आदर्श वाचन कहते हैं, शिक्षक को आदर्श वाचन की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। यथा संभव पाठ का वाचन प्रभावशाली ढंग से किया जाए। शिक्षक को यह ध्यान में रखना है कि गद्य शिक्षण में वाचन के प्रमुख दो उद्देश्य होते हैं।

क) छात्रों के सम्मुख गद्य वाचन का आदर्श रखना।

ख) पाठ्य सामग्री को छात्रों को आत्मसाथ कराना।

आदर्श वाचन करते समय शिक्षक को निम्न बातें ध्यान में रखनी चाहिए।

- 1) वाचन करते समय शिक्षक को अपना चित्र प्रकूलित रखना चाहिए। मुख के ऊपर नीरसता न होकर मृदु मुस्कान होनी चाहिए।
- 2) पाठ्य विषय के अनुसार भाव होनी चाहिए।
- 3) आदर्श वाचन करते समय शिक्षक को अपने खड़े होने के ढंग तथा पुस्तक पकड़ने के ढंग आदि पर ध्यान रखना चाहिए। झुककर या टेढ़े होकर खड़े होने के बजाय सीधे खड़ा होना चाहिए तथा बाएँ हाथ में पुस्तक ली जाए और दाहिने व हाथ को स्वतंत्र संचालन के लिए छोड़ दिया जाए।
- 4) परिस्थिति और आवश्यकतानुसार सीमित मात्रा में अंगों का संचालन किया जा सकता है।
- 5) जिस समय शिक्षक वाचन कर रहा है। उस समय बड़ी कक्षा के छात्र पुस्तक खोलकर उसमें न देखें वरण, पुस्तक बन्द करके शिक्षक की ओर देखें। ऐसा करने से छात्र शिक्षक के मुखकृति से भाव समझ सकेंगे। तथा उच्चारण और पढ़ने की ओर उनका ध्यान रहेगा।

अनुकरण वाचन के लिए भी उनका ध्यान रहेगा। अनुकरण वाचन के लिए छात्र तैयार हो सकेंगे।

- 6) गद्य का वाचन करते समय विराम आदि चिन्हों का ध्यान आवश्यक रखा जाए तथा भावानुसार ध्वनि का उतार चढ़ाव हो तथा मुख पर परिलक्षित हो।

ii) अनुकरण वाचन :

आदर्श वाचन के पश्चात् अनुकरण वाचन करना चाहिए छात्रों से अनुकरण वाचन कराने का प्रमुख उद्देश्य उन्हें वाचन कला में निपुण करने के अतिरिक्त उनके उच्चारण को भी शुद्ध करना है। छात्रों द्वारा वाचन करने से उनकी झीझक दूर होती है। अनुकरण वाचन का आरंभ सर्वप्रथम उस छात्र से कराया जाए जिसका उच्चारण शुद्ध तथा पढ़ने का ढंग कलात्मक हो। जब छात्र अनुकरण वाचन कर रहें हो उस समय शिक्षक को उनके वाचन पर ध्यान देना चाहिए उनकी अशुद्धियों को पकड़कर उसका सुधार करना चाहिए। शिक्षक का कर्तव्य है कि यह देखें कि छात्र सही ढंग से खड़ा है या नहीं। पुस्तक उनके हाथ में आँख से निश्चित दूरी पर है या नहीं। शिक्षक को इस पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

नए शब्दार्थ या शब्दव्याख्या :

अनुकरण वाचन के बाद छात्रों को पठितांश के नये शब्दों का अर्थ बतला देना चाहिए। इसके लिए शिक्षक को शब्दों का अर्थ सीधे रूप में न बतलाकर विभिन्न विधियों के माध्यम से बतलाना चाहिए। ये विधियाँ निम्न है :-

1) वास्तविक वस्तु को प्रस्तुत करके :

छोटी कक्षा में वास्तविक वस्तुओं का प्रदर्शन करके भी शब्दों का अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है। जैसे - पंकज शब्द का अर्थ कमल का फूल दिखाकर स्पष्ट किया जा सकता है।

2) चित्र, मूर्ति तथा मानचित्र के माध्यम से :

कुछ शब्द चित्र दिखाकर स्पष्ट किए जा सकते हैं, तथा कुछ मूर्ति दिखाकर। राशि का अर्थ चंद्रमा का चित्र दिखाकर बतलाया जा सकता है और प्रकार श्वान के लिए कुत्ते की मूर्ति प्रयोग में लायी जा सकती है।

3) संधि या समाज तोड़कर :

संधिविच्छेद के द्वारा भी शब्दों को समझाया जा सकता है। जैसे - नगधिराज शब्द के लिए शब्द को संधि विच्छेद द्वारा इस प्रकार समझाया जाएगा। नग + अधिराज। इसी प्रकार उपसर्ग अलग करके भी अर्थ समझाये जा सकते हैं। जैसे - सुपुत्र - सु + पुत्र।

4) वाक्य प्रयोग द्वारा :

कुछ शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके समझाया जा सकता है। उदारिण के लिए माना छात्रों को असाध्य शब्द समझाना है, तो वाक्य प्रयोग द्वारा यह शब्द इस प्रकार स्पष्ट किया जाएगा। कैसर एक असाध्य रोग है, इस विधि का प्रयोग करने से छात्रों में अर्थ को समझने की उत्सुकता रहती है तथा कक्षा का वातावरण भी सक्रीय रहता है।

5) पर्याय शब्द बतलाकर :

पर्याय शब्द बतलाकर भी अर्थ समझाया जा सकता है। उदारिण राशि शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए छात्रों से कहा जा सकता है, राशि के पर्याय शब्द चंद्रमा, राकेश, सुधान्शु, आदि है। उसी तरह 'निशा' रात, रात्रि रजनी आदि।

6) प्रसंग कथन द्वारा :

प्रसंग कथन अर्थात् घटना या कहानी के माध्यम से होगी अर्थ को स्पष्ट किया जा सकता है।

7) विलोम शब्द द्वारा :

विलोम शब्दों की अर्थ स्पष्ट करने में बड़ी सरलता रहती है। दुर्बल शब्द का बलवान शब्द, बतलाकर छात्रों को समझाया जा सकता है। उसी तरह उच्च, दिन-रात आदि बतला सकते हैं।

स्पष्टीकरण

इस पद को कुछ विद्वानों ने आत्मीकरण कहकर पुकारा है सफल शिक्षक की पहचान इसी में है। शिक्षक पाठ को कुशलता पूर्वक छात्रों के सामने प्रस्तुत कर सके तथा छात्र उसे भली-भाँति समझ सकें। शिक्षक पाठ को अच्छी तरह समझाने के लिए तथा बालकों की सुविधा के लिए एक पाठ को दो या तीन भाग में विभाजित कर सकता है। विभाजित करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक भाग स्वयं में पूर्ण हो। भाव खण्ड न हो। गद्य पाठ में ज्ञान की प्रधानता रहती है। अतः उस भाग से संबंधित सारा ज्ञान उसी भाग में दे देना चाहिए। शिक्षक का मुख्य उद्देश्य पाठ को समझाना होना चाहिए।

बोध प्रश्न :

किसी भी विषय का कोई भी पाठ हो उसे पढ़ाने के पश्चात् यह जानना आवश्यक है कि पाठ किसी सीमा तक बालको के समझ में आया। पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में शिक्षक सफल रहा या नहीं। यदि सफल रहा तो किसी सीमा तक इन सब बातों की जानकारी के लिए प्रश्न पूछे जाते ह। उन्हीं ही बोध प्रश्न

या मूल्यांकन कहा जाता है। प्रश्न पूछते समय ध्यान रखना चाहिए कि प्रश्न स्पष्ट सरल तथा संक्षिप्त हो तथा उसका वितरण समस्त कक्षा में सामान्य रूप से किया जाय।

कक्षा – कार्य :

बोध प्रश्न पूछने के बाद छात्रों को निम्नलिखित कार्य के रूप में कुछ प्रश्न दिए जाते हैं। प्रश्न वस्तु निष्ठ हो इसमें छात्रों की उपलब्धि की जाँच संबंधी प्रश्न होने चाहिए जैसे : रिक्त स्थान की पूर्ति हँ – नहीं या सही – गलत बतावें। सही मिलान करें आदि प्रश्न दिए जा सकते हैं।

गृह कार्य :

इसे पाठ को पढ़ाने के पश्चात पाठ से संबंध कुछ ऐसे प्रश्नों के उत्तर बालकों को लिखित रूप में देने के लिए कहा जाना चाहिए। जिनका संबंध पढ़ायी जानी वाली पाठ से हो, तथा बालक घर से करके ला सके। इसका प्रमुख उद्देश्य है।

1. बालकों के मस्तिष्क में अर्जित ज्ञान को स्थिर करना।
2. बच्चों में स्व-अध्ययन की आदत डालना।
3. अवकाश के समय का सदुपयोग कराना।
4. विचारों की लिखित अभिव्यक्ति का विकास कराना।



पद्य शिक्षण

कविता क्या है? विभिन्न स्तरों के बालकों में कविता के प्रति रूचि किस प्रकार उत्पन्न करेंगे।
उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

अथवा

कविता शिक्षण के उद्देश्यों पर प्रकाश डाले।

अथवा

कविता शिक्षण की विभिन्न विधियों का उल्लेख करें तथा उनमें से सर्वोत्तम दो विधियों को
विस्तार से समझाएँ?

अथवा

कविता शिक्षण की कौन-कौन सी विधियाँ हैं, इनमें कौन-कौन सी विधि सर्वोत्तम है और क्यों?

अथवा

छात्रों में काम के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए आप क्या करेंगे?

उत्तर : आत्मा की संकल्पनात्मक (प्रबल/तीव्र) अनुभूति काव्य है। कविता साहित्य का प्राण/आत्मा है। यह मानव मन के भावात्मक पक्ष की रसात्मक अभिव्यक्ति है। काम मनुष्य को उस धरातल पर ले जाता है। जहाँ वह स्वः पर की भावना से रहित होकर अपने को केवल मनुष्य अनुभव करता है। हृदय की इसी मुक्त अवस्था के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द अवस्था के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती है, वही कविता है।

वास्तव में कविता साहित्य जगत की उत्पत्ति में बीजारोपण का काम करती है। प्रत्येक भाषा के सत्य का समर्थक है। इतिहासकारों का मत है कि संसार के साहित्य में आदिकाल से ही पद्य की प्रधानता रही है। इस मत का आधार लेकर बहुत से विद्वानों ने गद्य और पद्य के संबंध पर कितनी ही आलोचनाएँ की। मैकाले का कहना है कि जैसे-जैसे समाज का विकास होता जाता है, वैसे-वैसे कविता का ह्रास हो रहा है। किन्तु बीच अदृश्य हो सकता है। उसका महत्व कभी भी कम नहीं हो सकता। कविता सदा से ही भाषा की साहित्यिक एवं कलात्मक सौन्दर्यनुमूति का प्रमुख स्रोत रही है। आदि काल से ही वह मानव के हृदय में आनन्द तथा इस का संचार करती रही है। उसी कारण मानव हृदय कविता के प्रति जितना विमुक्त होना चाहता है। उसकी स्मणीयता में रखना चाहता है और उसकी भाव लहरियों का अवगाहन कर आनन्दविभोर होना चाहता है। उतना भाषा की अन्य कृतियों में नहीं।

विद्वानों के अनुसार कविता की परिभाषा :

प्राचीन भारतीय साहित्यकारों के अनुसार :

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार – “वाक्यं रसात्मक काव्य ‘रसयुक्त वाक्य ही कविता/काम है”।

पंडित जगन्नाथ के अनुसार – “रमणीयार्थ प्रतिवादकः शब्द काव्य। ‘सुन्दर अर्थ प्रकट करने वाला शब्द काव्य है।”

आचार्य आनन्द वर्धन के अनुसार : “काव्यास्यात्मा ध्वनि” अर्थात् ‘काव्य की आत्मा रीति’ है। या ‘रीति ही काम की आत्मा है।”

आचार्य वाचन के अनुसार : “वक्रोक्तिः काव्य जीवितं” अर्थात् “वक्रोक्ति (टेड़ा कथन) ही काव्य की आत्मा है।”

रीति-ढंग, तरीका, नियम। वक्रोक्तिः वक्र + उक्ति।

पाश्चात्य मत

वर्ड्स वर्थ : कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक (विकास) है।

मैथ्यू आरनल्ड : कविता अपने मूल रूप में जीवन की आलोचना है।

कवि कॉलरिज : सर्वोत्तम क्रम में सर्वोत्तम शब्द रचना ही कविता है।

कीट्स : 'चिन्ताओं के शमन, एवं विचारों के उन्नयन के लिए मित्र सदृश ही कविता है।

हिन्दी साहित्यकारों के अनुसार :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल :

"हृदय की मुक्त अवस्था के लिए किया गया, शुद्ध विधान ही कविता है।"

महादेवी वर्मा के अनुसार :

"कविता में असीम सत्य की झांकी देखती है।"

सुमित्रा-नन्दन पंत :

"कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।"

जयशंकर प्रसाद :

"आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति काव्य है।"

बाबू गुलाब राय :

"काव्य संसार के प्रति कवि की भाव प्रधान मानसिक प्रक्रियाओं की कल्पना के ढाँचे में ढली हुई प्रेमरूपी प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।"

कविता का स्वरूप :

1) अनुभूति की प्रबलता :

जब मानव के अनुभूति प्रबल हो जाते हैं, तब वह मूक नहीं रह सकता और उन अनुभूतियों को रोकना भी संभव नहीं है। ये अनुभूतियाँ व्यक्ति को भाषा द्वारा अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करती हैं और कवि भाषा के माध्यम से कविता के रूप में प्रकट करता है। दुःख की असीम सतह ने कवि प्रसाद को अभिव्यक्ति के लिए विवश कर दिया।

जो घनीभूत पीड़ित थी
स्मृति नम में छायी
दुर्दिन के आँसू बनकर
आज बरसने को आयी !!

2) रसानुभूति :

कविता में इस की प्रधानता होती है। या यों कहें कि इस व काव्य परस्पर आधारित है। एक की आभाव में दूसरे का पक्ष निर्बल पड़ जाता है। इस कारण ही इस को काव्य की आत्मा कहा गया है। भरतमुनि ने कहा कि इस विहीन कविता कविता नहीं मात्र तुकबन्दी है।

3) भाषा :

भाषा कविता का महत्वपूर्ण स्वरूप है। कविता की भाषा भावानकूल होनी चाहिए। कविता में चुन-चुनकर, सोच-सोचकर और खोज-खोजकर शब्द नहीं रखने पड़ते, वरण भाषा पर अधिकार और भावों की प्रबलता दी उचित शब्दों को जन्म देते हैं।

4) सत्यं शिवं सुन्दरं :

यह भारतीय साहित्य का मूल भाव है। यह कविता का प्रमुख उद्देश्य भी है। कविता में सत्य की अनुभूति होती है। शिव अर्थात् कव्याणकारी की भावना तथा सुन्दर की अभिव्यक्ति होती है। परन्तु कवि का सत्य विधान सत्य के समान है सत्य नहीं होता वरण उमसे कल्पना का भी मेल होता है। जो उसे सुन्दर और मुग्धकारी बना देता है।

5) संगीत :

यदि भाव या इस कविता की आत्मा है, तो संगीत उसकी हृदय गति है। कविता में लय, ताल, स्वर, आरोह-अवरोह तथा हाव – भाव होता है। इन्हीं के कारण कविता के भाव उमर कर आते हैं।

काव्य शिक्षण के उद्देश्य :

1. छात्रों में कविता के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
2. छात्रों में भाव अनुरूप, उचित गति एवं, आरोह-अवरोह पढ़ने की क्षमता प्रदान करना।
3. छात्रों को कविता पढ़कर उसके भाव और अर्थ समझने एवं रसानुभूति करने की क्षमता लाना।
4. छात्रों को अलंकार का ज्ञान देना।
5. छात्रों की सृजनात्मक क्षमता को विकसित करना और काव्य सृजन के लिए उत्साहित करना।
6. छात्रों में पढ़ी हुई कविता का भाव अपने शब्दों में बता सकने की क्षमता का विकास करना।
7. कवि द्वारा व्यंजित भाव, अनुभूति, कल्पना तथा हृदयस्पंदी अपने शब्दों में व्यक्त कर सकने की क्षमता लाना।
8. कविता के माध्यम से प्राकृतिक सुन्दरता तथा काव्य सौंदर्य का पहचानने की क्षमता का विकास करना।
9. छात्रों को कवि का जीवन चरित्र, साहित्यिक विषय एवं उनका साहित्यिक रचना का भी ज्ञान देना।
10. कविता में वर्णित नैतिक मूल्यों पर आधारित छात्रों की अभिवृत्ति का परिमार्जन करना।
11. छात्रों में सामाजिक आदर्शों के अनुकूल आचरण करने का ज्ञान देना।

काव्य शिक्षण की विधियाँ :

काव्य शिक्षण किस प्रणाली के आधार पर किया जाय इस पर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। इस विषय में किसी विद्वान का मत है कि काव्य शिक्षण प्रणाली 'प्रेम करने' के समान है। उसी भावना से प्रेरित होकर कविता का शिक्षण इस प्रकार किया जाय कि छात्रों का हृदय झंकृत हो उन्हें कविता शिक्षण की कुछ प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं :

1. गीत एवं अभिनय प्रणाली :

इन प्रणालियों द्वारा विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण किया जाता है। गीतों या लय से युक्त पद्य को पढ़ने की प्रणाली गीत प्रणाली है। छोटी कविताओं को स्वर लय, ताल एवं भावानुसार पढ़ा जाता है। इन्हीं कविताओं या गीतों को क्रियात्मक रूप से भाव प्रदर्शन एवं अंग संचालन के साथ प्रस्तुत करना अभिनय प्रणाली है। ये दोनों प्रणालियाँ छोटे-छोटे बच्चों को सरसता पूर्वक शिक्षण कराने में सहायता प्रदान कराती हैं। बालक इनमें रुचि पूर्वक सक्रिय भाग लेते हैं। शिक्षक की क्रिया को छात्र अनुकरण करते हैं। अतः शिक्षक का निर्देश इस पद्धति में अपेक्षित है। इस प्रणाली में शिक्षक का कर्तव्य है कि शिक्षक स्वयं जोर-जोर से न पढ़ें और न ही छात्रों को जोर-जोर से पढ़ने दें। साथ ही आवश्यकता से अधिक अंगों का संचालन भी न करने दें। सहभागिता का निर्वाह आवश्यक है।

2. अर्थबोध प्रणाली :

यह प्रणाली प्राचीन प्रणाली है और परंपरागत रूप से चली आ रही है। प्रायः चौथी-पाँची कक्षा से ही इस प्रणाली का प्रारम्भ हो जाता है। जिसके अनुसार शिक्षक या तो स्वयं कविता पढ़ते हैं और उसका अर्थ स्वयं बतलाते हैं या छात्रों से कविता पढ़वाते हैं और शिक्षक उसका अर्थ बतलाते हैं। शिक्षक शब्दार्थ बतलाकर कविताओं का अर्थ बता देता है। वास्तव में यह प्रणाली काव्य शिक्षण के उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम नहीं होती, इसके विपरीत दोषपूर्ण ही सिद्ध होती है। इस विधि में भाव भाषा सौंदर्य का आनन्द अपने स्तर से छात्र नहीं ले पाते हैं। इस संदर्भ में 'रघुनाथ सकाया' का कहना है, "इस प्रणाली में निश्चय ही कविता की हत्या की जाती है और काव्य देवता का अपमान हो जाता है। इसके कविता पाठ का उद्देश्य सफल नहीं हो पाता।

3. प्रश्नोत्तर/खण्डनवय प्रणाली :

काव्य शिक्षण की इस विधि का प्रयोग वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक कविताओं के शिक्षण में किया जाता है। इस प्रणाली में प्रश्न और उत्तर की प्रमुखता रहती है। इसलिए इसे प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहा जाता है। इसके अंतर्गत शिक्षक कविता से संबंधित प्रश्न करते हैं और छात्र उसका उत्तर देते हैं। इस तरह प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता का विश्लेषण किया जाता है। और कविता की प्रत्येक भाग को जोड़कर सारा पद्य समझा देते हैं। यह प्रणाली वास्तव में गद्य पढ़ने की प्रणाली है।

इस प्रणाली के आधार पर शिक्षक कविता की प्रत्येक पंक्ति पर विशेष ध्यान देता है और उन पर प्रश्न करता जाता है। प्रश्नों के उत्तर स्वरूप बालक प्रत्येक भाग से संबंधित तथा भाव और विचारों को अच्छी तरह समझ जाते हैं। साथ ही बालकों को विषय वस्तु से अवगत कराया जाता है।

4. व्याख्या प्रणाली :

कविता शिक्षण में विशेष रूप से माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में इस प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। इस प्रणाली में व्याख्या से तात्पर्य काव्य की ऐसी शिक्षण प्रणाली से है, जिसके माध्यम से कविता के मूलभाव एवं विचार सौंदर्य की अनुमूति छात्रों को कराना अपना मूल उद्देश्य समझता है। कक्षा में काव्यभय वातावरण बनाये रखते हुए शिक्षक बालकों को कविता के भाव पक्ष एवं कला पक्ष आदि की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। इस पद्धति में शब्दार्थ की अपेक्षा कविता की भावार्थ का स्पष्टीकरण और सौंदर्य तत्वों का बोध प्रायः उपर्युक्त प्रश्नों की रचना पर निर्भर करता है। इस प्रणाली का प्रयोग करते समय शिक्षक को बीच-बीच में प्रश्न पूछना चाहिए साथ ही इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि व्याख्या अत्यंत सरल एवं सुबोध भाषा में हो, जिसे समझने में छात्रों को कठिनाई न हो।

5. तुलना प्रणाली :

यह प्रणाली व्याख्या प्रणाली से मिलती जुलती है। तुलना का तात्पर्य है जब दो तथ्यों के बीच की जाती है उसे तुलना प्रणाली कहते हैं। उदाहरण के लिए तुलसी-दास के बाल वर्णन की तुलना सूरदास के बाल वर्णन से की जाती है। इस तरह इस प्रणाली में शिक्षक संभाषा कवि तथा अन्य भाषाकवि द्वारा लिखित कविता की समान भावों की तुलना करते हैं। जिसके द्वारा बालकों में विभिन्न कवियों की उद्देश्यों मूल भावों एवं कवि शैली की तुलना करना आ जाता है। तुलनात्मक प्रणाली अनेक दृष्टियों से लाभप्रद है। इसके लाभों पर प्रकाश डालते हुए प्रो० रमन बिहारी लाल ने कहा है, "तुलनात्मक प्रणाली का अनुकरण करने से न केवल पाठ्यपुस्तक में संग्रहित कविताओं का रसास्वादन होता है अपितु प्रसंगवान तुलना के लिए प्रयुक्त कविताओं से भी बच्चों हो जाते हैं। इससे छात्रों की विवेचना शक्ति बढ़ती है। उनके ज्ञान का विस्तार होता है, और वे कवि के उद्देश्यों कविता के विभिन्न स्वरूपों और विभिन्न शैलियों से परिचय प्राप्त करते हैं। तुलनात्मक प्रणाली का प्रयोग वही शिक्षक सरलता से कह सकता है। जिसका ज्ञान काव्य के क्षेत्र में विस्तृत हो तथा जिसे अनक कविताएँ कंठस्थ हो।

6. व्यास प्रणाली :

व्याख्या प्रणाली के अंतर्गत ही व्यास प्रणाली की चर्चा की जाती है। यह प्रणाली विशेष रूप से शिक्षक प्रधान प्रणाली है। उसमें शिक्षक शब्दार्थ, भावार्थ, व्याख्या, समीक्षा, तुलना अपने प्रवचन एवं उदाहरण के माध्यम से स्वयं प्रस्तुत करता है। छात्र मात्र स्रोत की भाँति सुनने का कार्य करते हैं। इसमें बालकों की काव्य रसास्वादन की क्षमता का उतना विकास संभव नहीं होता जिनता की स्वयं बालकों द्वारा बराबर का भागीदार होने पर अपने भाव अभिव्यक्ति होने का अवसर मिलने पर संभव हो सकता है। इस प्रकार यह व्यास प्रणाली का दोष भी माना जाता है।

7. समीक्षा प्रणाली :

समीक्षा प्रणाली में कविता का यथार्थ मूल्यांकन किया जाता है। कवि की कल्पना उसके द्वारा प्रयोग किए गए अलंकार तथा भाषा आदि की आलोचना की कसौटी पर कसा जाता है। इस प्रणाली में अधिक से अधिक अध्ययन का भाव छात्रों पर रहता है। इस प्रणाली का प्रयोग उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए उपर्युक्त माना जाता है। क्योंकि इस स्तर के छात्र की काम तल, सौंदर्य की जानकारी रखते हैं। और आलोचना कर सकने अथवा जानने में समर्थ होते हैं।

इस प्रकार ऊपर वर्णित समस्त शिक्षण प्रणालियों में कुछ गुण हैं तो कुछ उसमें दोष शिक्षक का कर्तव्य है कि यह प्रत्येक प्रणाली की स्थिति तथा आवश्यकता अनुसार करें।



काव्य सौंदर्य अनुभूति से आप क्या समझते हैं? हाई स्कूल कक्षा के छात्रों में इसे आप किन विधियों से उत्पन्न कर सकते हैं?

अथवा

अपन छात्रों में मात्र भाषा में कविता के प्रति रूचि किस प्रकार उत्पन्न करेंगे।

उत्तर : काव्य के दो पक्ष हैं, कला पक्ष और भाव पक्ष कला पक्ष के अंतर्गत शब्द योजना, छंद, अलंकार, रस आदि आते हैं। इन सबका ज्ञान होना ही सौंदर्य अनुभूति कहलाता है। भाव पक्ष के अन्तर्गत कविता का भाव और कवि की भावना निहीति रहती है। कविता मानव हृदय में छिपे हुए भाव एवं राग-तत्व को जागृत करती है। मनुष्य में सन्निहित रागात्मक प्रवृत्तियों के उत्कर्ष से ही रासानुभूति का आभास होने लगता है। एवं भावों से परिचित होने लगते हैं। यही भावनुभूति है। अतः स्पष्ट है कि कविता शिक्षण द्वारा एक शिक्षक बालक के हृदय में विद्यमान रागात्मक वृत्तियों का संशोधन संस्कार एवं परिष्कार कराने का प्रयास कर सकता है, क्योंकि रागात्मक प्रवृत्तियों के उत्कर्ष से ही सृजनात्मक शक्तियों का विकास होता है। कक्षा में काव्य पाठ के द्वारा तो छात्रों में कविता के प्रति रूचि उत्पन्न की जा सकती है, परन्तु और भी अन्य साधन हैं जिनकी माध्यम से छात्रों में काव्य प्रेम की भावना जागृत की जा सकती है। ये साधन निम्नांकित हैं :

i) वाचन प्रतियोगिता :

विद्यालय में वाचन प्रतियोगिता का आयोजन कर छात्रों में काव्य के प्रति व रूचि जागृत की जा सकती है। छात्रों को कविता पाठ करने के तरीके बताए जाते हैं कि कविता पाठ किस प्रकार किया जाता है। इस प्रतियोगिता के लिए छात्र कविता को कंठस्थ करते हैं। कविता भाव मुद्रा, अंग संचालन के साथ सुनाने का अवसर मिलता है।

ii) निश्चित विषय पर काव्य पाठ :

कभी-कभी विद्यालय में निश्चित विषय पर काव्य पाठ का आयोजन किया जा सकता है। इसमें छात्र विद्यालय द्वारा निर्धारित विषय पर कविता संग्रह करते हैं और उसे याद करते हैं। काव्य पाठ सुनते समय शिक्षक को पक्षपात रहित होकर उत्तम कविता पाठ कर पुरस्कार देना चाहिए। इस प्रकार को प्रतियोगिताओं से छात्रों में विभिन्न भाषाओं की कविताओं की रूचि जागृत होती है।

iii) अत्याक्षरी :

अत्याक्षरी प्रतियोगिता का प्रचलन आज-कल पर्याप्त है। विद्यालयों में प्रायः अत्याक्षरी प्रतियोगिता हुआ करती है। इसमें छात्रों के दो दल बना दिए जाते हैं। एक दल का छात्र कविता पाठ करता है और दूसरे दल का छात्र उस कविता के अंतिम अक्षर से प्रारंभ होने वाली दूसरी कविता का पाठ करता है। इस प्रकार पर्याप्त काल तक दोनों में प्रतियोगिता चलते रहती है। जब एक दल दूसरे दल को कविता के अंतिम अक्षर से आरंभ होने वाली कविता नहीं सुना पाता तब वह दल पराजित घोषित कर दिया जाता है और दूसरे को विजयी।

अत्याक्षरी प्रतियोगिता का सबसे बड़ा लाभ यह है कि छात्र अपने दल को जिताने के लिए अनेक कविताएँ कंठस्थ कर लेते हैं। इस तरह बालकों में काव्य के प्रति रुचि भी उत्पन्न होती है।

iv) काव्य संग्रह पुस्तिका :

इसके अंतर्गत छात्रों से एक पुस्तिका बनवाई जाती है, जिसमें आधुनिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली सुन्दर कविताओं का संग्रह कलापूर्ण ढंग से किया जाता है। प्रत्येक कविता से संबंधित चित्र भी उस कविता के साथ चिपकाया जाता है। इस प्रकार का आकर्षक कविता संग्रह छात्रों में कविता के प्रति रुचि जागृत करता है।

v) कवि सम्मेलन या कवि गोष्ठी :

कवि सम्मेलन का आयोजन छात्रों से काव्य – प्रेम जागृत करने का सर्वोत्तम साधन है। विद्यालय में समय-समय पर कवि सम्मेलन या कवि गोष्ठी का आयोजन किया जाना चाहिए एवं इसमें शहर और बाहर के प्रसिद्ध कवियों को आमंत्रित करना चाहिए। कविता द्वारा किया गया कविताओं का सस्वर वाचन छात्रों पर विशेष प्रभाव डालता है, तथा वे स्वयं भी वैसा अनुकरण करने का प्रयास करते हैं। कवि सम्मेलन अथवा कवि गोष्ठी में भाग लेने के लिए छात्रों को उत्साहित किया जाना चाहिए एवं उन्हें अपनी कविताओं को सुनाने का अवसर मिलना चाहिए।

vi) समस्या पूर्ति :

छात्रों को काव्य रचना की प्रेरणा देने के लिए समस्या पूर्ति एक उत्तम साधन है, छात्रों को समस्या के रूप में एक पंक्ति दे दी जाती है। जिसकी पूर्ति करने के लिए वे काव्य का सृजन करते हैं। इससे छात्रों में कविता रचने की योग्यता का विकास होता है।

vii) कवियों की जयन्तियाँ :

विद्यालय में कभी-कभी जयन्ती पर्व का आयोजन किया जाना चाहिए। जयन्ती पर्व के अवसर पर उनकी कविताओं का पाठ या महापुरुषों की जयन्ती पर आधारित कविता पाठ का आयोजन किया जाना चाहिए।

उपर्युक्त वर्णित सभी प्रयासों के अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षक स्वयं कविता में रुचि रखता हो। स्वयं रुचि रखने वाला शिक्षक भावपूर्ण होकर प्रत्येक स्थल की गरिमा को अनुकूल रूप से प्रस्तुत करता है। परिणाम स्वरूप बालक भी उसकी ओर प्रेरित होकर काम सौंदर्य को समझने लगते हैं। इस प्रकार काम के प्रति रुचि जागृत करने में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। एवं शिक्षक द्वारा चयन की गई शिक्षण विधि भी महत्वपूर्ण होती है।

